2020 वर्षीय परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण अवतरणों की व्याख्या - 03/07/20

शास्त्री द्वितीय खण्ड - अनिवार्य द्वितीय-पत्र - राष्ट्रभाषा हिन्दी

तुम मनुष्य हो, अमित बुद्धि-बल-विलसित जन्म तुम्हारा।
क्या उद्देश्य रहित है जग में तुमने कभी विचारा?
बुरा न मानो, एक बार सोचो तुम अपने मन में।
क्या कर्तव्य समाप्त कर लिए तुमने निज जीवन में?

उत्तर:-

सन्दर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'पथिक' खण्डकाव्य के द्वितीय सर्ग से उद्धृत है। इसके कवि पंडित राम नरेश त्रिपाठी हैं। समुद्र के तट पर पथिक और पथिक प्रिया ~~की हुई बातचीत~~ के बीच हुई बातचीत को सुनकर 'मुनि' पथिक को वास्तविक ज्ञान से परिचित कराने का जो प्रयास किया है उसी से सन्दर्भित है।

व्याख्या - 'मुनि' पथिक को समझाते हुए कहता है कि परमात्मा ने सभी प्राणियों में मनुष्य को श्रेष्ठ बनाया है। यही नहीं उस परमात्मा ने साहस, पौरुष, सत्य, प्रतिभा, करुणा, दया इत्यादि से मनुष्य को पूर्ण बनाया है। तुम इस संसार में उद्देश्य रहित आए हो। तुम्हें इस पर गम्भीरता से विचार करना चाहिए। मुनि कहते हैं कि हे पथिक तुम मेरी बातों को बुरा न मानों। तुम अपने मन में स्थिर होकर चिंतन करो। तुम एकान्त सुखों के लिए संसार से भागने का प्रयास मत करो। ईश्वर ने तुम्हें भागने के लिए मानव रूप में संसार में नहीं भेजा है। इस संसार में जब तुम मानव के रूप में जन्म लिए हो तो तुम्हारे कंधों पर समाज और राष्ट्र के प्रति बहुत सारे कर्तव्य का भार भी है। इस दायित्व से भागकर तुम कहाँ जाओगे। मुनि कहते हैं कि हे पथिक प्रकृति से प्रेम करना गलत नहीं है। प्रकृति से प्रेम करना भी चाहिए। साथ ही साथ तुम्हें राष्ट्र के प्रति, अपनी मातृभूमि के प्रति भी जो तुम्हारी जिम्मेवारी है, उससे भागना कायरता कहलाती है। तुम प्रतिभाशाली हो, तुम्हारे अन्दर आत्मविश्वास है। इसलिए अपनी प्रतिभा का तुम्हें लाभ उठाना है और देश की पीड़ित जनता को उन्हें पीड़ा से मुक्त भी कराना है। यही तुम्हारा इस संसार में आने का मुख्य उद्देश्य है।

इस प्रकार प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि ने मुनि के द्वारा पथिक को कर्तव्य का रहस्य ज्ञान कराया है।

विशेष - इसमें मनुष्य को अपने दायित्व बोध का स्मरण कराया गया है।
भाषा सरल एवं शैली अलंकृत है।

डा० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० कृ० सं० महावि० खुबसेला, पूर्णियाँ

2020 वर्षीय परीक्षार्थियों के लिए राष्ट्रभाषा हिन्दी
पुस्तक का नाम- जयद्रथ-वध
कवि - मैथिलीशरण गुप्त
शास्त्री प्रथम खण्ड अ० दि० - पत्र 09/07/20

भावार्थ

था जो तुम्हारे सब सुखों का सार इस संसार में,
वह गत हुआ अब यहाँ से श्रेष्ठ स्वर्गागार में
हे प्राण! फिर अब किस लिए ठहरे हुए हो तुम अहो!
सुख छोड़ रहना चाहता है कौन जन दुख में कहो?
अपराध सौ सौ सर्वदा जिसके क्षमा करते रहे,
हँसकर सदा सस्नेह जिनके हृदय को हरते रहे,
हा! आज उस मुग्ध किंकरी को कौन से अपराध में -
हे नाथ! तजते हो यहाँ तुम शोक सिन्धु अगाध में।

भावार्थ:- वीर अभिमन्यु की पत्नी उत्तरा अपने पति के वियोग में अनेक प्रकार से विलाप करती हुई कहती है कि तुम्हारे सब सुखों का सारतत्व जो कुछ भी इस संसार में था वह आज सब कुछ नष्ट हो गया। अब यहाँ से वह भी तुम्हारे साथ ही स्वर्ग के स्थान में पहुँच गया है। हे प्राण तुम अब यहाँ पर किसलिए ठहरे हो। जब तुमको ~~स्वर्ग~~ के स्वर्ग के समस्त सुख मिल ही गये तब इस संसार में ठहरने का क्या लाभ है। सच्चाई यह है कि इस संसार में सभी सुख से रहना चाहते हैं दुःख में कोई भी रहना नहीं चाहता। इसलिए आपने मुझे यहाँ अकेला छोड़कर चले गये। दुःख में जीवन व्यतीत करने के लिए।

उत्तरा कहती है कि तुम जिसके हमेशा ही सौ अपराधों को क्षमा करते हो और बड़े प्रेम से हँसकर जिसके हृदय को छीन लेते रहे हो। हा आज मुझ जैसी सेविका से कौन सा अपराध हो गया है हे नाथ यहाँ तुम मुझे शोक के इतने गहरे सागर में छोड़ कर कहाँ चले गये हो।

शेष आगे -

प्रसार कर रहे हैं, अपने अत्याचारों का किला खड़ा कर रहे हैं।

सम्पूर्ण विश्व में ज्ञान एवं चेतना की ज्योति में एकरूपता है। संसार का कण-कण उसके तीव्र प्रकाश से प्रकाशित है। उसके अन्दर से प्रस्फुटित कान्ति की ज्वाला एक जैसा है। सत्य का उज्ज्वल प्रकाश जन-जन के हृदय में व्याप्त है।

प्रकाश की शुभ्र ज्योति का रूप एक है। वह सभी स्थान पर एक समान अपनी रोशनी बिखेरता है। क्रान्ति से उत्पन्न ऊर्जा एवं शक्ति भी सर्वत्र एक समान परिलक्षित होती है। इसीलिए समस्त जनता का चेहरा एक है।

सम्पूर्ण विश्व में दानव एवं दुरात्मा एकजुट हो गये हैं। दोनों की कार्यशैली एक है। इनके विरुद्ध छेड़े गये युद्ध की शैली भी एक है।

सारांश यह है कि संसार में अनेकों प्रकार के अत्याचार, शोषण तथा दमन समान रूप से अनवरत जारी है। उसी प्रकार जनहित के अच्छे कार्य भी समान रूप से हो रहे हैं। सभी की आत्मा एक है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

2020 वर्षीय परीक्षार्थियों के लिए

पुस्तक का नाम – दिगंत-भाग-2 पद्य भाग 03/07/20

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी

अ० हि० – पत्र

शीर्षक – जन-जन का चेहरा एक

कवि – गजानन माधव मुक्तिबोध

प्रश्न:- "जन-जन का चेहरा एक" शीर्षक कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखें।

उत्तर:- 'जन-जन का चेहरा एक' शीर्षक कविता में यशस्वी कवि मुक्तिबोध ने अत्यन्त सशक्त एवं रोचक ढंग से विश्व की विभिन्न जातियों एवं संस्कृतियों के बीच एकरूपता दर्शाते हुए मनोवैज्ञानिक वर्णन किया है। कवि के अनुसार संसार के प्रत्येक महादेश, प्रदेश तथा नगर के लोगों में एक समान प्रकृति पायी जाती है।

विद्वान कवि की दृष्टि में प्रकृति समान रूप से अपनी ऊर्जा, प्रकाश एवं अन्य सुविधाएँ समस्त प्राणियों को वे चाहे जहाँ निवास करते हों, उनकी भाषा एवं संस्कृति जो भी हो बिना भेद-भाव किए प्रदान कर रही है। कवि की संवेदना प्रस्तुत कविता में मुखरित हुई है।

ऐसा प्रतीत होता है कि कवि शोषण तथा उत्पीड़न की शिकार जनता द्वारा अधिकारों के संघर्ष का वर्णन कर रहा है। वह समस्त संसार में रहने वाली जनता के शोषण के खिलाफ संघर्ष को रेखांकित करता है। इसलिए कवि उनके चेहरे की झुर्रियों को एक समान पाता है।

नदियों की तीव्र धारा में जन-जन की जीवन धारा का बहाव कवि के अन्तर्मन की वेदना के रूप में प्रकट हुआ है।

जनता अनेक प्रकार के अत्याचार तथा अन्याय से प्रताड़ित हो रही है। मानवता के शत्रु जनशोषक दुर्जन लोग काली-काली छाया के समान अपना

शेष आगे –

प्रस्तुत पद में राष्ट्रवादी कवि मैथिलीशरण गुप्त ने उत्तरा के विलाप का मार्मिक चित्रण किया है। पद में सहज और स्वाभाविक रूप का दर्शन कराने में कवि पूर्णतः सफल दिखाई पड़ते हैं।

डा० देवचरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महाविद्यालय सुखसेना, पूर्णियाँ